National Research Journal of Human Resource Management
Volume No: 10, Issue No: 2, Year: 2023 (July-December)
PP: 21-29
ISSN No: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

'केशर कस्तूरी' में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, प्रवृत्तियों का विवेचनात्मक अध्ययन

पुष्पा कुमारी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

सारांश–

मानव-चेतना सदा समाज सापेक्ष रहती है। अतः साहित्य भी समाज निरपेक्ष नहीं रह सकता। यह इसलिए है कि- "जो भाव और विचार लोगों के हृदयों को स्पंदित करते हैं, वही साहित्य पर भी अपनी छाया डालते हैं।"[1] मानव की परिस्थितियों एवं उसकी मनोवृत्तियों का संघर्ष मात्र दिखाकर ही आज के साहित्यकार का उत्तरदायित्व पूर्ण नहीं होता, अपितु निरन्तर बदलते हुए बाहरी और भीतरी परिवेश से प्राप्त अनुभवों के फलस्वरूप जो परिवर्तन उत्पन्न होते हैं, उन्हें भी साहित्यकार को चित्रित करना पड़ता है। व्यक्ति के संबंधों के परिणामस्वरूप समाज में जो संगठनात्मक व्यवस्थाएँ निर्मित होती हैं- आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक आदि सब साहित्य से अटूट संबंध रखती हैं।

"कथा-विधा साहित्य की सबसे सुन्दर एवं सरस विधा है... कहानी जब तक समाज-सापेक्ष नहीं होगी, वह कोई वैचारिक आलोड़न उत्पन्न नहीं कर सकती।... जीवन-मूल्य किसी भी वर्ग के अभिव्यक्तिकार को अभिव्यक्ति की प्राथमिकता होने चाहिए; इसके अभाव में कहानी, कहानी नहीं कोरी किताबी कल्पना मात्र है।"[2] कच्चे साक्षात् सामाजिक यथार्थों को परखते हुए शिवमूर्ति जी "ने जिन सामाजिक कहानियों की रचना की है- उनमें समाज की अनेक समस्याओं को उन्होंने विस्तृत आयामों में बड़ी सफलता के साथ चित्रण किया है।

मुख्य बिंदुः- सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, आलोरण, अभिव्यक्तिकार, ज्वनंत, कसाईबाड़ा, महत्वाकांक्षा, जनमानस, भ्रष्टाचार, सत्तमोह, स्वार्थसिद्, निरबंसिया, कलुषित, संवाहक, विशेषाधिकार, अनावरण,

'केशर कस्तूरी' में राजनैतिक चेतना–

ISSN No: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

अन्य वर्तमान हिंदी साहित्यकारों की तरह शिवमूर्ति जी ने भी अपनी कहानियों में राजनैतिक चेतना का बहुत व्यापक चित्रण किया है। साथ ही देश में, विशेषकर, ग्रामीण जीवन में घटनेवाली राजनैतिक घटनाओं, राजनैतिक उथल-पुथल और राजनीति के दाँव-पेंच को चित्रित करने में वे चूके भी नहीं है।

शिवमूर्ति जी ने अपनी कहानियों द्वारा विशेषकर 'कसाईबाड़ा' एवं 'अकाल-दंड' से जिस राजनैतिक संवेदना को इतने विविध रूपों में चित्रित किया है वह देखते ही बनती है। राजनैतिक विकृति, उसकी यथार्थ स्थिति को शिवमूर्ति जी ने बड़ी बेबाकी से चित्रित करके राजनैतिक चेतना के विविध आयामों को बड़ी वखूबी उकेरा है।

प्राइमरी स्कूल के अध्यापक लीडर को राजनीति का भूत सवार होता है। वे सबसे पहले प्रधान बनना चाहते हैं। पुराने प्रधान को हराकर, फिर ब्लाक प्रमुख, फिर एम.एल.ए., फिर मिनिस्टर बनने की महत्वाकांक्षा में हैं लीडर।

इसके लिए आवश्यक है सामूहिक विवाह करानेवाले प्रधान के प्रति जनमानस में घृणा के भाव का प्रचार करना। शनिचरी की बेटी का भी सामूहिक विवाह हुआ था जो कोठे पर पहुँचा दी जाती है। लीडर जी तैयार करते हैं शनिचरी को और उसे अनशन धरने पर बैठा देते हैं तथा शनिचरी के खेतों को धोखे से अपने नाम करा लेते हैं। पत्नी के पूछने पर वे कहते हैं- "अरे फूल दि ग्रेट, इसमें धोखा क्या है? मैं नहीं कराता तो परधान कराता।"[3]

राजनैतिक नेताओं के छल-छद्म पर करारा प्रहार देकर शिवमूर्ति जी 'कसाईवाड़ा' में लीडराइन के संवाद द्वारा आगे लिखते हैं- "धोखेबाज, बेईमान। तुम्हारे ही पाप के कारण मेरी, कोख नहीं फल रही है। तुम लोग कसाई हो। सारा गाँव कसाईवाड़ा है। मैं नहीं रहूँगी इस गाँव में।"[4]

यहाँ पर लीडराइन को आम जनता के प्रतीक और प्रतिनिधि के रूप में शिवमूर्ति प्रस्तुत करते हैं। राजनीति एक अभियान के रूप में हमारे सामने आती है। राजनीति की प्रतिबद्धता केवल सिद्धांत मात्र रह जाती है। स्वार्थता का प्रभाव पूरी तरह राजनीति में व्याप्त है। नेतागण अपनी स्वार्थता की पूर्ति के लिए राजनीति का सहारा लेते हैं। इसके कारण शोषण, भ्रष्टाचार, सत्तामोह आदि राजनीति का हिस्सा बन गया है। सत्ता को कायम रखने के लिए, यानी, पदलिप्सा के कारण कोई भी कुत्सित वृत्ति करने के लिए नेतागण तैयार हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप गुंडागर्दी राजनीति का अंग बन गया है।

 ISSN No: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

अपनी सत्ता को कायम रखने की इच्छा में गुंडागर्दी का सहारा लेकर आम जनता को दबाकर रखने की कूटनीति राजनीतिज्ञों ने अपनायी है। इसलिए आम जनता लोडराइन के समान राजनीति और राजनैतिक दोनों से नाराज है और वह राजनीति से दूर रहकर अपनी ही जोखिम में जीने को मजबूर हो जाती है।

राजनीति में एक प्रतिद्वन्द्वी दूसरे के खिलाफ कैसी चालें चलाता है. इसे चित्रित करने में भी शिवमूर्ति अत्यंत सफल हो गये हैं। 'कसाईबाड़ा' में लीडरजी और परधान के बीच की घटनाएँ इसका ज्वलंत उदाहरण है। 'कसाईबाड़ा' में परधान के खिलाफ गाँववालों की दरखास्त लीडरजी जमा करके बताते हैं- "लेकिन आप लोग भी सोचिए और समझिए। गलत आदमी को परधान बनाने का क्या रिजल्ट होता है।"[5]

समाज सेवा के झूठे मुखौटे पहनकर उपहार, रियायत, राहत, सहायता आदि के नाम पर जनता को मोहित कराके धोखे में फंसानेवाली राजनैतिक कुचालों का भी वर्णन शिवमूर्ति जी की कहानियों में हुआ है। राजनैतिक षड्यंत्रों की असलियत उजागर करके शिवमूर्ति जी 'कसाईबाड़ा' में पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं- "मिडवाइफ ने एक-एक डिब्बा उपहार में दिया था सभी दुल्हनों को। कंट्रासेप्टिव पिल्स, फैमिली प्लानिंग का लिटरेचर।"[6]

आज देश में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि शासक एवं अधिकारी लोग, विशेषकर, पुलिस अधिकारी लोग दोहरा जीवन जीते हैं। उसके चरित्र का यह दोगलापन आम जनता को अकसर असहनीय हो जाता है। शिवमूर्ति जी ने अपनी कहानी 'कसाईबाड़ा' में पुलिस द्वारा समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का बड़ा ही सशक्त चित्रण किया है- "परधानजी और लीडरजी दोनों को बुलाया गया है।... कहीं लीडर पहले पहुँच गया तो बंटाढार हो जाएगा। परधानजी बार-बार परधानिन को सचेत करते हैं, 'अजी, सुनती हो जी। कुछ भेंट-पूजा के लिए थोड़ा खटाई, अचार। तुम्हें पता है कि दरोगाइन कॉहड़ौरी और जामुन का सिरका पहले माँगती है। वो जो परेम कुमार खेलने की खड़खड़िया है न, दे दो। दरोगाजी का लड़का खेलगा।"[7]

राजनीति आज हमारे ऊपर किस कदर हावी हो चुकी है कि राजनीति और राजनीतिज्ञों के हाथों में कठपुतली बनकर शासक लोग अलग-अलग जातियों के हिसाब से शोषण करके लाभ उठाते हैं। 'अकाल-दंड' में ऊँची जात के लोगों को 'जबरा लोग' और निम्न जाति के लोगों को 'कमजोर लोग' नाम देकर पुकारा गया है। आमजनता को ऊँच जात

और निम्न जात विभागों में बाँटकर पक्षापात की राजनीति चलाकर फायदा उठानेवाले सिकरेटरी के कार्यकलापों की ओर संकेत करते हुए शिवमूर्ति जी 'अकाल दंड' में लिखते हैं-"जबरा लोगों के पास। जो दबदबे वाले हैं पानी का टैंकर आने पर जो पहले अपने बैलों को पिलाने के लिए बड़े-बड़े ड्रम और 'छोड़' भर लेते हैं, तब गाँव के कमजोर लोगों की बारी आती है, अपने लिए गगरा-गगरी भरने की... मजदूरी देने के नाम पर भी दो-आँखी। ऊँची जाति वालों का नाम रजिस्टर में दर्ज करा लिया जाता है।

डॉ. अवधेश चंद्रगुप्त के शब्दों में "हमारे देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह रहा है कि अधिकांश राजनैतिक नेतागण और अन्य राज्याधिकारी राष्ट्र की उपेक्षा कर अपनी स्वार्थसिद्ध करने लगे। परिणामस्वरूप अराष्ट्रीयता में वृद्धि के कारण अपेक्षित मात्रा में न तो भारतीय नागरिकों में नैतिक उन्नयन ही संभव हो सका न देश ही स्वावलंबी बन सका। फिर भी नाना प्रकार की योजनाओं द्वारा तत्कालीन नवगठित सरकार द्वारा देश को समृद्ध बनाने का प्रयास किया जाता रहा।"[8]

'भरतनाट्यम' में हम पढ़ते हैं-"माना कि तुम अनएम्लायड ग्रेजुएट हो। तुम्हें प्रीफेंस मिलना चाहिए, लेकिन इसी लायसेंस के लिए समुझ बनिया डेढ़ हजार देने को तैयार है। साहब निरबंसिया तो हैं नहीं।...यहाँ पर भी अधिकारी लोगों द्वारा होनेवाले शोषण और भ्रष्टाचार का ठीक उदाहरण हमें मिलता है।

'तिरिया चरित्तर' में भ्रष्टाचार की पोल खोलकर ढोंगी राजनीति से लाभ उठानेवाले प्रशासनिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार का अत्यन्त संश्लिष्ट चित्रण शिवमूर्ति जी ने किया है। 'तिरिया चरित्तर' में प्रस्तुत 'पंच' राजनैतिक भ्रष्टाचार में निमग्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक है। 'पंच' का प्रत्येक सदस्य भ्रष्टाचारी प्रशासक का प्रतिनिधि है। 'तिरिया चरित्तर' की नायिका विमली को दागने का फैसला सुनाकर सरपंच बोधन महतो पूछता है- "किसी को कोई एतराज हो तो बोलो। सबको मंजूर है?"[9] यहाँ पर हम समझते हैं कि राजनैतिक भ्रष्टाचार से सबसे ज्यादा शिकार बननेवाली लोग भारत की नारियाँ ही है।

केशर-कस्तूरी' कहानी में सरकारी रोजगार व्यवस्था में प्रचलित राजनीति से संबंधित भ्रष्टाचार और सरकारी तन्त्र की असलियत उजागर करने का प्रयास शिवमूर्ति जी ने साफ दिखाया है। उदाहरण देखिए "पता चला है कि वे सभी उच्चाधिकारियों के कैंडिडेट्स

के लिए अलिखित रूप से रिर्जव हो चुके हैं। कि उम्मीदवार सी अधिकारी के घर चार साल से बर्तन मल रहे।

उपर्युक्त चर्चा से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि 'केशर कस्तूरी' कहानी संग्रह में शिवमूर्ति जी ने भारत में आज प्रचलित जिस कलुषित राजनैतिक चेतना का समावेश किया है, वह असलियत उजागर करनेवाला है। यदि हम सकारात्मक दृष्टि से देखें तो, 'केशर कस्तूरी' काफी सुधारात्मक सुझावों से संपन्न भी है। शिवमूर्ति जी जरूर यह चाहते होंगे कि पाठक इस सुधारात्मक चेतना को ठीक पहचाने और इसका संवाहक बनकर भारतीय समाज को बेहतर राजनैतिक अवस्था की ओर ले जाए।

'केशर कस्तूरी' में आर्थिक चेतना–

'केशर कस्तूरी' जैसी एक उदात्त साहित्यिक कृति में कथापात्रों से संबंधित आर्थिक चेतना और उससे जुड़े हुए आर्थिक सिद्धांत विशेष का समावेश होना स्वाभाविक है।

समाज में मुख्यतः दो वर्ग स्वीकार किये जा सकते हैं-विकसित तथा अविकसित या सीधे सपाट शब्दों में शोषक या शोषित। अगर रचनाकार इस अविकसित वर्ग का पक्षधर है, तो वह उसकी ईमानदारी है। शिवमूर्ति जी ने खुद कहा है- "हमारा समाज बहुत पहले से दो हिस्सों में बँटा हुआ है। बहुत छोटा हिस्सा सब तरह की सुख-सुविधा और विशेषाधिकारों का भोग करता तथा एक बड़े समूह के हिस्से का सुख चैन हड़पता है। बड़ा हिस्सा यदा-कदा इसके विरुद्ध उठाते हुए हर तरह का अन्याय और दुख झेलता भोगता रहता आया है। राजाओं-महाराजाओं और उससे भी पहले कबीलाई सत्ता से लेकर आज के इस आधुनिक कहे जानेवाले दौर तक यह उसी तरह जारी है। सिर्फ उसका रूप बदलता रहा है।"[10]

'केशर कस्तूरी' कहानी संग्रह में शिवमूर्ति जी ने उस आर्थिक सिद्धांत का समावेश बड़ी ईमानदारी से किया है, जो, अविकसित या शोषित वर्ग के जीवन से संबंध रखता है। अपनी कहानियों द्वारा शिवमूर्ति जी ने अनवरत लड़ाई की है आर्थिक दृष्टि से हाशिए पर छोड़े गये शोषित एवं अविकसित ग्रामीण जनता के संघर्षों को अनावरण करने के लिए। निम्न वर्ग और निम्न मध्य वर्ग की आर्थिक विपन्नताओं को प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्रों को केंद्र में रखकर आर्थिक तगियों में पिसनेवाली भारतीय आमजनता की

शोचनीय अवस्था का चित्रण शिवमूर्ति जी ने बड़ी निपुणता से 'केशर कस्तूरी' में किया है।

हमें ऐसा लगता है कि सामंतवाद एवं पूँजीवाद के खंडन करने में शिवमूर्ति जी उत्सुक हैं और मार्क्सवादी आर्थिक विचारधारा की शैली को अपनाकर वे अपनी कहानियों के विवरण को आगे बढ़ाने में बड़े तत्पर रहे हैं।

वास्तविकता जिस प्रकार रहती है, ठीक उसी प्रकार के सुस्पष्ट और विशद चित्रण पर आधारित है मार्क्सवादी आर्थिक विश्लेषण।

मार्क्सवादी आर्थिक विचारधारा में आर्थिक घुटन को उनकी समग्रता में समझा जाता है। मार्क्सवादी आर्थिक विचारधारा से प्रभावित साहित्यकार अपने-अपने समय के आमजीवन को अपनी कृतियों में असलियत के साथ अंकन करने में तत्पर रहते हैं। इस दृष्टि से देखें तो शिवमूर्ति जी ने मार्क्सवादी आर्थिक विचारधारा से प्रभावित साहित्यकारों की भाँति भारतीय ग्रामीण जीवन में, विशेषकर उत्तरभारत के अवध-प्रदेश के ग्रामीण जीवन में उपस्थित आर्थिक संघर्षों को शामिल करके अपनी कहानियों द्वारा आर्थिक विपन्नता की दुखद गाथाएँ रची हैं और अपनी कहानियों द्वारा शिवमूर्ति जी ने यह स्पष्ट दिखाया है कि भारतीय ग्रामीण जनता सदैव आर्थिक शोषण का शिकार है।

'कसाईबाड़ा' की शनिचरी पर होनेवाला आर्थिक शोषण, 'अकाल दंड' की सुरजी के आर्थिक संघर्ष, 'सिरी उपमा जोग' की ग्रामीण पत्नी की आर्थिक विसंगतियाँ, 'भरतनाट्यम' के बेरोजगार नायक ज्ञान का आर्थिक संकट, 'तिरिया चरित्तर' की विमली की आर्थिक परेशानियाँ, 'केशर कस्तूरी' की केसर के आर्थिक मोहभंग आदि में जिन सच्चाइयों का समावेश है, 'केशर कस्तूरी' में सम्मिलित आर्थिक चेतना का स्पष्ट परिचय ये सब हमें देते हैं और यह समर्थन करते हैं कि शिवमूर्ति जी की कहानियों की आर्थिक चेतना की चर्चा मार्क्सवादी विचारधारा से जरूर प्रभावित हुई है।

आर्थिक उदारवाद के दौर में भारत ने जब कदम रखे तब यह जोर-शोर से प्रचारित-प्रसारित किया गया कि इससे सामाजिक समरसता बढ़ेगी और सभी वर्गों का जीवन खुशहाल बनेगा। लेकिन शिवमूर्ति जी हमें दिखाते हैं कि विकास के नाम आर्थिक शोषक शक्तियाँ दलित समाज, नारी जीवन, अनुसूचित और पिछड़ी जातियों पर अत्याचार करके निर्मम, निष्करुण और बर्बर रीति से आर्थिक लाभ उठाती है। साथ-साथ गाँवों के

शिक्षित लोग और कर्मचारी तंत्र के नीचले स्तर के लोग मिल-जुलकर निर्धन ग्रामवासियों का शोषण करते हैं। दोनों बड़े चालाक और मक्कार हैं।

'केशर कस्तूरी' में सांस्कृतिक चेतना

संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा की

'संस्कृ' धातु में 'क्तिन' प्रत्यय लगने से बनता है। इसका शाब्दिक एवं व्याकरणिक अर्थ 'अच्छी स्थिति', 'सुधरी स्थिति' आदि का बोधक है। लेकिन, विशद और विस्तृत दृष्टि से देखें तो संस्कृति सामाजिक अंतः क्रियाओं एवं सामाजिक व्यवहारों के उत्प्रेरक प्रतिमानों का समुच्चय है। इस समुच्चय में ज्ञान, विज्ञान, कला, आस्था, नैतिक मूल्य एवं प्रथाएँ समाविष्ट होती हैं। अतः संस्कृति भौतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक तथा आध्यात्मिक स्तरों से संबंधित मनुष्य की साधनाओं और चेष्टाओं को समष्टिगत अभिव्यक्ति है। यह मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के स्वरूप का निर्माण, निर्देशन, नियमन और नियंत्रण करती है। अतः संस्कृति मनुष्य की जीवनपद्धति, वैचारिक दर्शन एवं सामाजिक क्रियाकलाप में उसे समाष्टिवादी दृष्टिकोण की अभिव्यंजना है।"[11]

'केशर कस्तूरी' कहानी संग्रह की कहानियों के कथानक के माध्यम से उत्तर भारत के विशेषकर अवध प्रांत की देहाती एवं कस्बाई संस्कृति की विसंगतियों, पाखण्डों, अन्धविश्वासों, काईयाँपन, हरामखोरी, गन्दगी आदि सब अखबारी खबरों की भांति नग्न रूप में पाठकों के सामने शिवमूर्ति जी प्रस्तुत करते हैं।

शिवमूर्ति की कहानियों में पुरुषप्रधान और पितृसत्तात्मक उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रसार के परिणामस्वरूप पतित अवस्था में पहुँच गयी भारतीय ग्रामीण संस्कृति का गहरा अंकन मिलता है। कहानियाँ यह खुल्लमखुल्ला दिखाती है कि भारतीय समाज इस पुरुषप्रधान-पितृसत्तात्मक उपभोक्तावादी संस्कृति से इतना दूषित हो गया है कि वर्तमान समाज अपनी सांस्कृतिक परंपरा, शैक्षणिक पवित्रता और मानवीयता खो बैठा है। पुरुषप्रधान पितृसत्तात्मक उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव में पड़कर दया, सहानुभूति, करुणा आदि मानवीय गुणों के बदले आज मनुष्य ने अपने हृदय में पैशाचिकता को पाल रखा है। नेता और अधिकारीगण इतने अधःपतित और भ्रष्टाचारी हो गए हैं कि अर्थ और काम से मोहित होकर किसी भी प्रकार के घृणित कार्य को करते हुए

आज वे कभी भी शर्माते नहीं हैं। स्त्री का यौन शोषण होना और प्रतिरोध किए जाने पर उसके ऊपर शारीरिक व मानसिक अत्याचार किया जाना, यह पुरुष-प्रधान भारतीय समाज उपभोक्तावादी संस्कृति का साधारण प्रवृत्ति के रूप में प्रचलित हो गयी है।

'कसाईबाड़ा' में शनिचरी नामक एक अनपढ़, गरीब व शोषण की शिकार हरिजन स्त्री है जिसकी बेटी रूपमती को ग्रामप्रधान ने सामूहिक विवाह कार्यक्रम के बहाने पैसे लेकर शहर के एक आदमी को वैश्यावृत्ति कराने के लिए सौंप दिया है। प्रधान का प्रतिद्वंद्वी लीडरजी अनपढ़ शनिचरी के दस्तखत कोरे स्टाम्प पेपर पर कराकर उसकी जमीन हड़प लेता है। 'अकाल दंड' की सुरजी, 'तिरिया चरित्तर' की विमली आदि को पुरुषप्रधान उपभोक्तावादी संस्कृति के शिकार के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है। 'भरतनाट्यम' के ज्ञान की पत्नी, ज्ञान का बड़ा भाई और गाँव के दर्जी के यौन शोषण का शिकार हो गयी है। 'सिरी उपमा जोग' की ग्रामीण पत्नी अफसर पति की उपभोक्तावादी मनोभाव का शिकार बन गयी है। 'केशर कस्तूरी' की केसर अपने ही पति में और पति के भाईयों में उपस्थित उपभोक्तावादी संस्कृति का शिकार होकर दयनीय जीवन बिताती रहती है।

'कसाइंबाडा' के अधरंगी को छोडकर सभी पुरुष कथापात्र पुरुषप्रधान उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रतिनिधि हैं। 'अकाल दंड' के सिकरेटरी, सरपंच रंगी बाबू आदि भी इस वर्ग के प्रतिनिधियाँ ही हैं। 'सिरी उपमा जोग' के अफसर पति अपनी ग्रामीण पत्नी के त्याग और सहयोग का खूब लाभ उठाके अंत में उसे छोड़कर शहरी प्रेयसी के साथ शहर में ही घर बसाता है। 'तिरिया चरित्तर' के सभी पुरुषकथा पात्र जैसे डरेवर बाबू, बिल्लर, सीताराम, बिसराम, शिवाले के पुजारी, सरपंच बोधन महतों आदि पुरुषप्रधान उपभोक्तावादी संस्कृति के संवाहक ही हैं। 'भरतनाट्यम' के ज्ञान का पिता पितृसत्तात्मक पुरुषप्रधान उपभोक्तावादी संस्कृति को पकड़ में ही है। 'तिरिया चरित्तर' की विमली को पुरुषप्रधान उपभोक्तावादी संस्कृति ने तिरिया चरित्तर घोषित किया। पितृसत्तात्मक संस्कृति का शिकार होकर विमली अपने ही ससुर बिसराम के यौन शोषण से पीड़ित होती है।

यहाँ पर हम समझते हैं कि पितृसत्तात्मक संस्कृति का प्रचार वास्तव में नारी जाति की वास्तविक हार का कारण बन जाता है। भारतीय समाज पुरुषप्रधान और पितृसत्तात्मक समाज है, जहाँ पुरुष की इच्छाएँ, महत्वाकांक्षाएँ ही सर्वोपरि मानी जाती हैं। समाज में

ISSN No: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

स्त्रियों को सिर्फ 'शारीरिक भूख' मिटाने का साधन माना जाता है। 'केशर कस्तूरी' की केसर के जीवन की शोचनीय अवस्था के कारण मुख्यतः उसके पति, पति के भाई लोग आदि पुरुषप्रधान उपभोक्तावादी सांस्कृतिक दृष्टिकोण ही है।

पुरुषप्रधान उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से नारी शोषण और आर्थिक लाभ के पीछे की दौड़ के साथ-साथ सामाजिक सबंध घटते जाते है। मानव-मन में अशांति एवं आक्रोश बढ़ते जाते हैं। 'सिरी उपमा जोग' का ये अवतरण इन "बातों का गवाह है। "आपके चाचाजी हमें बड़ी मार मारे। मेरा एक दाँत टूट गया। हाथ-पाँव सूज गए।"[12] उस चुड़ैल की औलाद तो नहीं, जिसे आप गाँव का राजपाट दे आए हैं? ऐसा हुआ तो खबरदार। जो उसे गेट के अंदर भी लाए, खून पी जाऊँगी पुरुषप्रधान उपभोक्तावादी संस्कृति से ग्रामीण जीवन की सारी मर्यादाएँ और नैतिकताएँ समाप्त होती जा रही हैं तथा मनुष्य और स्वार्थ केंद्रित होता जा रहा है। भारतीय पवित्र सनातन सामाजिक चरित्र बदलता जा रहा है। 'तिरिया चरित्तर' की विमली को ससुर बिसराम अपनी कामपिपासा के लिए उपभोग करने के बाद की अवस्था का वर्णन इन बातों को स्पष्ट करता है... "खटिया पर बेसुध पड़ा बिसराम का काला अधनंगा शरीर नाच रहा है। युगों की भूख मिटाकर बेखबर सोया पड़ा तृप्त-संतृप्त दैत्य! खुले मुँह से बहती पीक की धार?

शिवमूर्ति की कहानियों में भारत में तेज प्रचलित यूरोपीयकरण संस्कृति के बारे में पर्याप्त परामर्श है। भाषा-संवाद, रहन-सहन, खान-पान, आचार-व्यवहार, वेश-भूषा, साज-श्रृंगार आदि से लेकर चिंतन-विचार, भाव-वृत्ति आदि सब में यूरोपीय संस्कृति से प्रभावित अवस्थाओं के चित्रण कहानियों में हमें मिलते हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृति जरूर यूरोपीयकरण संस्कृति से ही भारत में प्रचलित हो गयी है। 'कसाईबाडा' के लीडर की भाषा में अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग देखिए- ऐसे काम्पलेक्स केस में तो खुद दरोगा जी को अब तक गाँव में पहुँच जाना चाहिए था। "अरे यह क्या? थ्री एक्स? दरोगाजी भाव-विभोर होकर लीडरजी को गले लगा लेते हैं।"[13] यूरोपीय संस्कृति के प्रभाव से भारतीय समाज में आयी हुई विदेशी शराब और मांसाहार की संस्कृति की सूचना इस प्रकार 'केशर कस्तूरी' में अकसर मिलते हैं। भारतीय पारिवारिक संस्कृति के विरुद्ध आज भारत में प्रचार होनेवाली यूरोपीय विकृत पारिवारिक संस्कृति के अनुयायी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है 'सिरी उपमा जोग' का अफसर पति और उसका शहरी

परिवार। उन्हें गाँव की सीधी-सादी पग-पग पर साथ देनेवाली पत्नी की जगह आधुनिक कठोर और मक्कार पत्नी अच्छी लगती है।

निष्कर्ष :–

भारतीय जनता विशेषकर ग्रामीण जनता आज भी असंघठित है। शोषण, भ्रष्टाचार, अन्याय आदि के खिलाफ आवाज उठाकर जनता को एकत्रित करके सांस्कृतिक ह्रास के विरुद्ध सच्चा और आदर्श नेतृत्व खड़ा करने की आवश्यकता है। इससे संबंधित समस्याएँ और चुनौतियाँ ही हैं 'केशर कस्तूरी' की अन्य मुख्य समस्या है।

संदर्भ सूची :–

1. प्रेमचंद कुछ विचार, पृष्ठ 8
2. मधुमति, जून-जुलाई 2010 पृष्ठ 194
3. केशर कस्तूरी, शिवमूर्ति, पृष्ठ 26
4. वही पृष्ठ 27
5. वही, पृष्ठ 8
6. वही, पृष्ठ 11
7. स्वतंत्रोतर हिंदी नाटक विचार तत्व, डॉ अवधेश चंद्रगुप्त, पृष्ठ 211
8. केशर कस्तूरी, शिवमूर्ति, पृष्ठ 76
9. वही, पृष्ठ 142
10. वही, पृष्ठ 155
11. समकालीन लेखन और आधुनिक संवेदना, संपादक कल्पना वर्मा, पृष्ठ 157
12. बया, दिसंबर, 2006 पृष्ठ 28
13. केशर कस्तूरी, शिवमूर्ति, पृष्ठ 99